

सिद्धांत का अर्थ, आगमनात्मक एवं निगमनात्मक सिद्धांत, सिद्धांत निर्माण एवं महत्त्व

1. प्रस्तावना (Introduction)

सामाजिक कार्य अनुसंधान में सिद्धांत का विशेष महत्त्व है। सामाजिक जीवन में अनेक प्रकार की घटनाएँ, समस्याएँ और मानवीय व्यवहार देखने को मिलते हैं। इन घटनाओं के कारणों, स्वरूप तथा उनके बीच संबंधों को समझने के लिए वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता होती है। सिद्धांत इन घटनाओं को व्यवस्थित रूप से समझने तथा उनकी व्याख्या करने में सहायता करता है।

सामाजिक कार्य अनुसंधान में सिद्धांत और परिकल्पना एक-दूसरे से संबंधित हैं। सिद्धांत के आधार पर परिकल्पनाएँ बनाई जा सकती हैं और अनुसंधान से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर सिद्धांतों का परीक्षण, विकास या संशोधन किया जा सकता है।

2. सिद्धांत का अर्थ (Meaning of Theory)

सिद्धांत से तात्पर्य अवधारणाओं, परिभाषाओं और कथनों के ऐसे व्यवस्थित समूह से है, जो विभिन्न घटनाओं के बीच संबंधों को स्पष्ट करता है तथा उन घटनाओं की व्याख्या करने में सहायता करता है।

सरल शब्दों में, सिद्धांत वह व्यवस्थित विचार या व्याख्यात्मक ढाँचा है, जिसके माध्यम से किसी घटना के घटित होने के कारणों और उसके विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास किया जाता है।

उदाहरण: सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देखकर और उसका अनुकरण करके अनेक व्यवहार सीखता है। इस सिद्धांत का उपयोग बच्चों के व्यवहार तथा सामाजिक वातावरण के प्रभाव को समझने में किया जा सकता है।

3. सिद्धांत की परिभाषा (Definition of Theory)

सामाजिक कार्य अनुसंधान के संदर्भ में सिद्धांत को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया जा सकता है—

सिद्धांत अवधारणाओं, मान्यताओं और तार्किक रूप से संबंधित कथनों का एक व्यवस्थित समूह है, जो सामाजिक घटनाओं के बीच संबंधों की व्याख्या करता है तथा उनके बारे में वैज्ञानिक समझ विकसित करने में सहायता करता है।

सिद्धांत केवल अनुमान नहीं होता, बल्कि उसका निर्माण तार्किक विचारों, अवलोकनों, उपलब्ध प्रमाणों और अनुसंधान के आधार पर किया जाता है।

4. सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ

सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. व्यवस्थित स्वरूप: सिद्धांत विभिन्न अवधारणाओं और कथनों को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है।
2. व्याख्यात्मक प्रकृति: यह सामाजिक घटनाओं के स्वरूप और उनके बीच संबंधों को समझाने में सहायता करता है।
3. तार्किक आधार: सिद्धांत की अवधारणाओं और कथनों के बीच तार्किक संबंध होना चाहिए।
4. अनुसंधान से संबंध: सिद्धांत अनुसंधान को दिशा प्रदान करता है और अनुसंधान के निष्कर्ष सिद्धांतों को विकसित करने में सहायक होते हैं।

5. परीक्षण की संभावना: वैज्ञानिक सिद्धांतों से प्राप्त अनेक कथनों और निष्कर्षों की अनुभवजन्य जाँच की जा सकती है।

6. सामान्यीकरण: सिद्धांत समान परिस्थितियों में पाई जाने वाली घटनाओं के संबंध में सामान्य समझ विकसित करने में सहायता करता है।

7. संशोधनशीलता: नए प्रमाण प्राप्त होने पर सिद्धांत में संशोधन या पुनर्व्याख्या की जा सकती है।

5. सिद्धांत के प्रकार

सामाजिक कार्य अनुसंधान में सिद्धांत निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए दो प्रमुख दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हैं—

1. आगमनात्मक सिद्धांत (Inductive Theory)

2. निगमनात्मक सिद्धांत (Deductive Theory)

इन दोनों दृष्टिकोणों के माध्यम से अनुभवजन्य तथ्यों, परिकल्पनाओं और सिद्धांतों के बीच संबंध को समझा जा सकता है।

6. आगमनात्मक सिद्धांत (Inductive Theory)

(क) अर्थ

आगमनात्मक दृष्टिकोण में अनुसंधानकर्ता विशिष्ट घटनाओं, अनुभवों और अवलोकनों से शुरुआत करता है। वह विभिन्न घटनाओं में पाई जाने वाली समानताओं और प्रतिरूपों का अध्ययन करके व्यापक निष्कर्ष या सामान्य सिद्धांत विकसित करने का प्रयास करता है।

सरल शब्दों में, आगमनात्मक दृष्टिकोण में विशिष्ट तथ्यों से सामान्य निष्कर्ष की ओर बढ़ा जाता है।

(ख) आगमनात्मक दृष्टिकोण की प्रक्रिया

आगमनात्मक दृष्टिकोण की प्रमुख अवस्थाएँ निम्नलिखित हैं—

1. अवलोकन: किसी सामाजिक घटना या व्यवहार का निरीक्षण करना।

2. तथ्यों का संकलन: साक्षात्कार, अवलोकन, केस स्टडी या अन्य विधियों से जानकारी प्राप्त करना।

3. वर्गीकरण: प्राप्त तथ्यों को समानताओं और विशेषताओं के आधार पर व्यवस्थित करना।

4. प्रतिरूपों की पहचान: तथ्यों में बार-बार दिखाई देने वाली समानताओं या संबंधों को पहचानना।

5. सामान्य निष्कर्ष: प्राप्त प्रमाणों के आधार पर सामान्य निष्कर्ष विकसित करना।

6. सिद्धांत निर्माण: पर्याप्त प्रमाण और विश्लेषण के आधार पर एक व्याख्यात्मक सिद्धांत विकसित करना।

(ग) उदाहरण

मान लीजिए कि एक सामाजिक कार्यकर्ता ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के अनुभवों का अध्ययन करता है।

अध्ययन के दौरान वह पाता है कि अनेक महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और आर्थिक संसाधनों तक सीमित पहुँच के कारण

निर्णय लेने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

इन अनुभवों का व्यवस्थित विश्लेषण करके वह यह समझ विकसित कर सकता है कि शिक्षा और आर्थिक संसाधनों तक पहुँच महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता से संबंधित हो सकती है।

यह निष्कर्ष आगे के अनुसंधान के लिए एक संभावित सिद्धांत या व्याख्यात्मक ढाँचा विकसित करने में सहायता कर सकता है।

ध्यान रहे कि कुछ महिलाओं के अनुभवों के आधार पर सभी महिलाओं के बारे में सार्वभौमिक निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। सामान्यीकरण के लिए पर्याप्त और विविध प्रमाण आवश्यक हैं।

(घ) आगमनात्मक दृष्टिकोण की विशेषताएँ

1. इसकी शुरुआत अवलोकन और अनुभवजन्य तथ्यों से होती है।
2. इसमें विशिष्ट घटनाओं से सामान्य निष्कर्ष की ओर बढ़ा जाता है।
3. यह नए सिद्धांतों के विकास में सहायक होता है।
4. इसमें गुणात्मक अनुसंधान और क्षेत्रीय अध्ययन उपयोगी हो सकते हैं।
5. इसमें अनुसंधान के दौरान नए विचारों और अवधारणाओं के विकसित होने की संभावना रहती है।

(ङ) आगमनात्मक दृष्टिकोण का महत्त्व

नई सामाजिक घटनाओं को समझने में सहायता करता है।

सामाजिक समस्याओं के संबंध में नए विचार विकसित करता है।

सामाजिक कार्य के क्षेत्रीय अनुभवों को व्यवस्थित ज्ञान में बदलने में सहायक होता है।

उन परिस्थितियों में उपयोगी है जहाँ पहले से पर्याप्त सिद्धांत उपलब्ध नहीं होते।

आगे के अनुसंधान के लिए नई परिकल्पनाएँ विकसित करने में सहायता करता है।

7. निगमनात्मक सिद्धांत (Deductive Theory)

(क) अर्थ

निगमनात्मक दृष्टिकोण में अनुसंधानकर्ता किसी मौजूदा सिद्धांत या सामान्य कथन से शुरुआत करता है। इसके आधार पर वह विशिष्ट परिकल्पनाएँ तैयार करता है और तथ्यों के माध्यम से उनकी जाँच करता है।

सरल शब्दों में, निगमनात्मक दृष्टिकोण में सामान्य सिद्धांत से विशिष्ट निष्कर्ष या परीक्षण योग्य कथन की ओर बढ़ा जाता है।

(ख) निगमनात्मक दृष्टिकोण की प्रक्रिया

निगमनात्मक दृष्टिकोण की प्रमुख अवस्थाएँ निम्नलिखित हैं—

1. सिद्धांत का चयन: किसी मौजूदा सिद्धांत का चयन करना।
2. परिकल्पना निर्माण: सिद्धांत के आधार पर परीक्षण योग्य परिकल्पना तैयार करना।
3. अनुसंधान डिजाइन: परिकल्पना की जाँच के लिए उपयुक्त अनुसंधान पद्धति निर्धारित करना।
4. तथ्यों का संकलन: साक्षात्कार, प्रश्नावली, अवलोकन या अन्य विधियों से आँकड़े एकत्रित करना।
5. विश्लेषण: प्राप्त आँकड़ों का व्यवस्थित विश्लेषण करना।
6. परिकल्पना का मूल्यांकन: यह निर्धारित करना कि प्राप्त प्रमाण परिकल्पना का समर्थन करते हैं या नहीं।
7. सिद्धांत का पुनर्मूल्यांकन: परिणामों के आधार पर सिद्धांत की व्याख्या या प्रयोज्यता पर विचार करना।

(ग) उदाहरण

मान लीजिए कि अनुसंधानकर्ता सामाजिक अधिगम सिद्धांत के आधार पर यह अध्ययन करना चाहता है कि बच्चे अपने आसपास के लोगों के व्यवहार से किस प्रकार सीखते हैं।

वह परिकल्पना बनाता है कि बच्चों के सामने सहयोगात्मक व्यवहार का सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करने से उनके सहयोगात्मक व्यवहार की संभावना बढ़ सकती है।

इसके बाद वह उपयुक्त अनुसंधान विधियों से बच्चों के व्यवहार का अध्ययन करता है और प्राप्त परिणामों का विश्लेषण करता है।

इस प्रकार मौजूदा सिद्धांत से परिकल्पना बनाकर उसका परीक्षण करना निगमनात्मक दृष्टिकोण का उदाहरण है।

(घ) निगमनात्मक दृष्टिकोण की विशेषताएँ

1. इसकी शुरुआत किसी सामान्य सिद्धांत या कथन से होती है।
2. इसमें सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ा जाता है।
3. परिकल्पना निर्माण और परीक्षण को विशेष महत्त्व दिया जाता है।
4. इसमें चरों के बीच संबंधों की व्यवस्थित जाँच की जा सकती है।
5. यह मौजूदा सिद्धांतों की प्रयोज्यता का मूल्यांकन करने में सहायक होता है।

(ङ) निगमनात्मक दृष्टिकोण का महत्त्व

मौजूदा सिद्धांतों की जाँच करने में सहायता करता है।

स्पष्ट परिकल्पनाएँ विकसित करने में सहायक होता है।

अनुसंधान को व्यवस्थित दिशा प्रदान करता है।

चरों के बीच संबंधों का अध्ययन करने में उपयोगी है।

सिद्धांतों की सीमाओं और उनकी प्रयोज्यता को समझने में सहायता करता है।

8. आगमनात्मक एवं निगमनात्मक दृष्टिकोण में अंतर

अंतर का आधार आगमनात्मक दृष्टिकोण निगमनात्मक दृष्टिकोण

1. प्रारंभ विशिष्ट तथ्यों और अवलोकनों से सामान्य सिद्धांत से
2. दिशा विशिष्ट से सामान्य की ओर सामान्य से विशिष्ट की ओर
3. प्रमुख उद्देश्य नए सिद्धांत या व्याख्या विकसित करना सिद्धांत से निकली परिकल्पना की जाँच करना
4. प्रारंभिक आधार अनुभवजन्य तथ्य मौजूदा सिद्धांत या सामान्य कथन
5. परिकल्पना अध्ययन के दौरान विकसित हो सकती है प्रायः सिद्धांत के आधार पर पहले बनाई जाती है
6. उपयोग नई सामाजिक घटनाओं की खोज और समझ मौजूदा सिद्धांतों के परीक्षण और मूल्यांकन में
7. उदाहरण क्षेत्रीय अनुभवों से नया व्याख्यात्मक ढाँचा विकसित करना सिद्धांत से परिकल्पना बनाकर आँकड़ों द्वारा उसकी जाँच करना

महत्वपूर्ण तथ्य: सामाजिक कार्य अनुसंधान में आगमनात्मक और निगमनात्मक दृष्टिकोण एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। दोनों का संयुक्त उपयोग भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अवलोकनों से कोई नया विचार विकसित किया जा सकता है और फिर निगमनात्मक पद्धति से उससे निकली परिकल्पनाओं की जाँच की जा सकती है।

9. सिद्धांत निर्माण (Theory Construction)

(क) सिद्धांत निर्माण का अर्थ

सिद्धांत निर्माण वह व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से अनुसंधानकर्ता विभिन्न अवधारणाओं, तथ्यों, अवलोकनों और उनके बीच संबंधों का अध्ययन करके किसी घटना की व्याख्या करने वाला सिद्धांत विकसित करता है।

सामाजिक कार्य अनुसंधान में सिद्धांत निर्माण का उद्देश्य सामाजिक घटनाओं और मानवीय व्यवहार को समझने के लिए तार्किक तथा प्रमाण-आधारित व्याख्यात्मक ढाँचा तैयार करना है।

(ख) सिद्धांत निर्माण की प्रमुख अवस्थाएँ

1. अनुसंधान समस्या का चयन

सबसे पहले अनुसंधानकर्ता किसी सामाजिक समस्या या घटना का चयन करता है।

उदाहरण—ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण का अध्ययन।

2. संबंधित साहित्य का अध्ययन

अनुसंधानकर्ता विषय से संबंधित पुस्तकों, शोधपत्रों, पूर्व अध्ययनों और उपलब्ध सिद्धांतों का अध्ययन करता है।

इससे समस्या की पृष्ठभूमि तथा पहले से उपलब्ध ज्ञान की जानकारी प्राप्त होती है।

3. अवधारणाओं की पहचान

अनुसंधान समस्या से संबंधित प्रमुख अवधारणाओं और चरों की पहचान की जाती है।

उदाहरण—शिक्षा, रोजगार, आय, सामाजिक स्थिति और निर्णय लेने की क्षमता।

4. तथ्यों का संकलन

उपयुक्त अनुसंधान विधियों द्वारा संबंधित जानकारी एकत्रित की जाती है। इसके लिए साक्षात्कार, प्रश्नावली, अवलोकन और केस स्टडी जैसी विधियों का उपयोग किया जा सकता है।

5. तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण

प्राप्त तथ्यों को व्यवस्थित करके उनकी समानताओं, भिन्नताओं और संभावित संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

6. संबंधों की पहचान

अनुसंधानकर्ता यह समझने का प्रयास करता है कि विभिन्न अवधारणाएँ और चर किस प्रकार एक-दूसरे से संबंधित हैं।

7. परिकल्पना निर्माण एवं परीक्षण

प्राप्त जानकारी या मौजूदा सिद्धांत के आधार पर परिकल्पनाएँ तैयार की जा सकती हैं। इसके बाद उपयुक्त विधियों द्वारा उनकी जाँच की जाती है।

8. सामान्यीकरण एवं व्याख्या

पर्याप्त प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं और सामाजिक घटना की व्याख्या विकसित की जाती है।

9. सिद्धांत का विकास

प्राप्त प्रमाणों, तार्किक संबंधों और निष्कर्षों के आधार पर सिद्धांत या व्याख्यात्मक ढाँचा विकसित किया जाता है।

10. पुनः परीक्षण एवं संशोधन

नए प्रमाण मिलने पर सिद्धांत की पुनः जाँच की जाती है। आवश्यकता पड़ने पर उसमें संशोधन या सुधार किया जाता है।

इस प्रकार सिद्धांत निर्माण एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें नए अनुसंधान के आधार पर ज्ञान का विकास होता रहता है।

10. सामाजिक कार्य अनुसंधान में सिद्धांत का महत्त्व

सामाजिक कार्य अनुसंधान में सिद्धांत का महत्त्व निम्नलिखित है—

1. सामाजिक घटनाओं की व्याख्या

सिद्धांत सामाजिक घटनाओं, मानवीय व्यवहार और सामाजिक संबंधों को व्यवस्थित ढंग से समझने में सहायता करता है।

2. अनुसंधान को दिशा देना

सिद्धांत अनुसंधानकर्ता को अध्ययन की समस्या निर्धारित करने, संबंधित चरों की पहचान करने तथा अनुसंधान प्रश्न तैयार करने में सहायता करता है।

3. परिकल्पना निर्माण

सिद्धांत के आधार पर परीक्षण योग्य परिकल्पनाएँ विकसित की जा सकती हैं। इन परिकल्पनाओं की जाँच से सिद्धांत के विभिन्न पक्षों को समझने में सहायता मिलती है।

4. सामाजिक समस्याओं के कारणों को समझना

सिद्धांत गरीबी, बेरोजगारी, बाल अपराध, लैंगिक असमानता और सामाजिक बहिष्करण जैसी समस्याओं से संबंधित कारकों और उनके बीच संबंधों को समझने में सहायता करता है।

5. तथ्यों का व्यवस्थित विश्लेषण

सिद्धांत अनुसंधानकर्ता को प्राप्त तथ्यों को एक व्यापक संदर्भ में समझने तथा उनके बीच संभावित संबंधों की व्याख्या करने में मदद करता है।

6. सामाजिक कार्य के व्यावहारिक अभ्यास में सहायता

सिद्धांत सामाजिक कार्यकर्ताओं को व्यक्तियों, परिवारों, समूहों और समुदायों की परिस्थितियों को समझने के लिए उपयोगी वैचारिक आधार प्रदान करता है।

उदाहरण के लिए, पारिवारिक संबंधों से जुड़े सिद्धांतों की सहायता से परिवार में संचार और आपसी संबंधों का अध्ययन किया जा सकता है।

7. कार्यक्रमों एवं नीतियों के विकास में योगदान

सिद्धांत और अनुसंधान से प्राप्त प्रमाण सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों तथा नीतियों के निर्माण और मूल्यांकन में सहायता कर सकते हैं।

8. नए ज्ञान का विकास

सिद्धांत उपलब्ध ज्ञान को व्यवस्थित करता है और आगे के अनुसंधान के लिए नए प्रश्नों तथा संभावित व्याख्याओं को विकसित करने में सहायता करता है।

9. अनुसंधान निष्कर्षों को समझना

सिद्धांत अनुसंधान के निष्कर्षों को व्यापक सामाजिक संदर्भ में समझने में मदद करता है। इससे यह पहचानने में सुविधा होती है कि निष्कर्ष किन परिस्थितियों में लागू हो सकते हैं।

10. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

सिद्धांत सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में तार्किक विचार, व्यवस्थित अवलोकन और प्रमाण-आधारित व्याख्या को प्रोत्साहित करता है।

11. निष्कर्ष (Conclusion)

अंततः कहा जा सकता है कि सिद्धांत सामाजिक कार्य अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण आधार है। यह सामाजिक घटनाओं तथा मानवीय व्यवहार को समझने, उनकी व्याख्या करने और अनुसंधान को दिशा प्रदान करने में सहायता करता है।

आगमनात्मक दृष्टिकोण विशिष्ट तथ्यों से सामान्य निष्कर्ष विकसित करने पर बल देता है, जबकि निगमनात्मक दृष्टिकोण सामान्य सिद्धांत से परिकल्पना बनाकर उसकी जाँच करने पर केंद्रित होता है। दोनों दृष्टिकोण सिद्धांत निर्माण और वैज्ञानिक अनुसंधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस प्रकार सिद्धांत, परिकल्पना और अनुसंधान एक-दूसरे से संबंधित हैं तथा इनके संयुक्त उपयोग से सामाजिक कार्य के क्षेत्र में व्यवस्थित ज्ञान विकसित करने और सामाजिक समस्याओं को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Kothari, C. R. (2004). Research Methodology: Methods and Techniques.
2. Kerlinger, Fred N. (1986). Foundations of Behavioral Research.
3. Babbie, Earl (2016). The Practice of Social Research.
4. Rubin, Allen and Babbie, Earl (2017). Research Methods for Social Work.